सोनभद्र जिले की बैगा जनजाति की सामाजिक/शैक्षिक समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

–डॉ. प्रमोद कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
के.एन.आई.पी.एस.एस., सुल्तानपुर

सारांश

भारत के विभिन राज्य में भिन्न–भिन्न जनजातियाँ रहती हैं। जिन जनजातियों को संविधान की अनुसूची में दिया गया है, उन्हें अनुसूचित जनजाति के नाम से जाना जाता है।[1]

उ0प्र0 में जनगणना 2011 के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या में एस0टी0 0.6 प्रतिशत हैं। वर्तमान में सूचीबद्ध जनजातियों की संख्या 12 है जिनमें से एक है बैगा जनजाति।.[2]

बैगा जनजाति उ0प्र0 का एकमात्र जिला सोनभद्र में पायी जाती है जिसकी जनसंख्या 30006 है। बैगा जनजाति की बहुत–सी सामाजिक–शैक्षिक समस्याएँ हैं जिनके समाधान के लिए तथा विकास के लिए उ0प्र0 में कई परियोजनाएँ संचालित की गई हैं।

इस शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा बैगा जनजाति की सामाजिक–शैक्षिक समस्याओं का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन कर उससे जुड़ी अन्य जानकारी प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : जनजाति, बैगा जनजाति, सामाजिक समस्या, शैक्षिक समस्या, विकास परियोजना।

प्रस्तावना :–

भारत सरकार ने उ0प्र0 की बैगा जनजाति को अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में रखा है।[3] जिसके लिए सरकार ने अनेक योजनाएँ चलाई हैं। जनजाति शब्द मन में आते ही उसके अर्थ को जानने की उत्सुकता होने लगती है जिसके अर्थ एवं परिभाषा को बताते हुए गिलिन एवं गिलिन लिखते हैं, ''स्थानीय आदिम समूहों के किसी भी संग्रह को जो कि एक सामान्य क्षेत्र में रहता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो और एक सामान्य संस्कृति का अनुसरण करता हो, एक जनजाति कहते हैं।''[4]

जनजाति के लिये स्वतंत्र भारत के संविधान में 'अनुसूचित जनजाति' शब्द का प्रयोग किया गया है जिसमें उ0प्र0 की बैगा जनजाति भी शामिल की गई है। 'बैगा' का अर्थ होता है– ''ओझा या शमन'' यह जनजाति जनेऊ पहनती हैं। पूजा–पाठी का काम करते हैं। प्रेत–बाधा आने पर ओझाई व झाड़–फूंक का काम करते हैं। यह जनजाति द्रविड़ समूह की एक आदिम जनजाति हैं। इनमें जो शिक्षित हो गये हैं उनके रहन–सहन में उन्नति हुई है।[5] बैगा जनजाति उ0प्र0 के कुल 75 जिलों में से मात्र एक ही जिला सोनभद्र में निवास करती है, जिसकी जसंख्या जनगणना 2011 के अनुसार उ0प्र0 की कुल जनसंख्या में 30006 है। इस बैगा जनजाति को 2003 में संविधान की अनुसूची में सूचीबद्ध किया गया था।[6] अध्ययनित बैगा जनजातीय समूह वैकासिक संदर्भों के साथ जुड़कर नया रूप पाने को है, वहीं अपनी विशिष्टताओं तथा अपने अस्तित्व को बनाये रखने भी उनके लिए महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए विकास परियोजनाओं को चलाये जाने के बावजूद भी बैगा जनजाति की कुछ सामाजिक तथा शैक्षिक समस्याएँ हैं। जो कि कुछ पहले से थी और कुछ बाद बढ़ गई।[7]

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. बैगा जनजाति की सामाजिक शैक्षिक समस्याओं का सामाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अवलोकन करना।
2. साहित्य का पुनरावलोकन करना।
3. बैगा जनजाति में हुए सामाजिक–शैक्षिक परिवर्तन का अवलोकन करना।

विधि तंत्र :–

प्रस्तुत अध्ययन बैगा जनजातियों की सहभागिता पर आधारित है। अध्ययन के लिए सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन का अवलोकन करके बैगा जनजातियों की सामाजिक–शैक्षिक स्थिति को स्पष्ट किया गया है।

शोध प्रविधि :–

इस शोध में गुणात्मक के साथ विवरणात्मक प्रविधि का उपयोग किया गया है। इसमें आँकड़े संकलित करने के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक पद्धति का उपयोग हुआ है।[8]

सूचना का स्रोत :–

यह शोध अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक सूचना पर आधारित हैं जिसका संकलन अवलोकन तथा साक्षात्कार पद्धति द्वारा प्राथमिक सूचनाओं के संकलन हेतु किया गया है। द्वितीयक सूचनाओं के संकलन के हेतु जनजातीय विकास विभाग की रिपोर्ट, उ0प्र0 सरकार द्वारा चलाई गई विशेष परियोजना, जनजातियों से सम्बन्धित बनाये गये विभिन्न कानूनों का अवलोकन, विभिन्न प्रकाशित शोध पत्र, विभिन्न पुस्तकें तथा वेबसाइटों का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र :–

उ0प्र0 के सोनभद्र जिले के घोरावल ब्लाक के गाँवों को लिया गया है।

न्यादर्श तथा उसका चुनाव :–

न्यादर्श हेतु चुने गये ब्लाक के विभिन्न गाँवों से 200 बैगा परिवारों के मुखिया को लिया गया है।

मानक उपकरण एवं फलांकन :–

तथ्य संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली को लिया गया है।

साहित्य का पुनरावलोकन :–

प्रो0 एम0एल0 गुप्ता एवं डॉ0 डी0डी0 शर्मा ने अपनी पुस्तक ''समाजशास्त्र'' में बताया है कि जनजातियों को आदिम समाज, आदिवासी, बनवासी, वन्य जाति, गिरीजन तथा अनुसूचित जनजाति आदि नामों से जाना जाता है और बताया है कि इसकी विशेषता है– सामान्य भू–भाग, सामान्य भाषा, विस्तृत आकार, एक नाम, अन्तर्विवाह, सामान्य संस्कृति, आर्थिक आत्मनिर्भरता, निजी राजनीतिक संगठन, सामान्य निषेध आदि।

डॉ0 रवीन्द्रनाथ मुकर्जी की पुस्तक 'सामाजिक शोध व सांख्यिकी' का अध्ययन करने से पता चला है कि इस शोध पत्र में किस पद्धति, स्रोत इत्यादि का उपयोग करें।

उ0प्र0 स्पेशल, इग्जाम टाइम्स के अध्ययन से बैगा जनजाति की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी मिली जो कि उ0प्र0 में 30006 है तथा मात्र सोनभद्र में हैं।

डॉ0 मेघा देशपाण्डे के ''बैगा जनजाति का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' से बैगा जनजाति के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई जिससे उनकी सामाजिक शैक्षिक स्थिति का भी पता चला।

सोनभद्र के घोरावल विकास खण्ड (ब्लाक) के कुछ गाँव से प्राप्त जानकारी से 'बैगा जनजाति में जो परिवर्तन हुए हैं' का पता चला है।

वैरियर एल्विन ने भी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''द बैगा'' में बैगा जनजाति के बारे में विस्तार से लिखा है।

विभिन्न वेबसाइट से प्राप्त जानकारी से बैगा जनजाति में होने वाले परिवर्तन के बारे में जानकारी मिली है जो आधुनिक समाज में अपनी पहचान खोते जा रहे हैं। जिनसे उनके सामने सामाजिक–शैक्षिक समस्याएँ खड़ी हो रही हैं।

उपर्युक्त विवरण के बाद स्पष्ट है कि वर्तमान में बैगाओं के सामने उनकी सामाजिक–शैक्षिक समस्याएँ बढ़ गई हैं जिनके समाधान के लिए सरकार द्वारा बहुत–सी परियोजना चलाई हैं।[9] जैसे–

उ0प्र0 में जनजातियों के विकास हेतु संचालित परियोजनाएँ

- एकीकृत जनजाति विकास परियोजना– लखीमपुर खीरी, सोनभद्र में
- थारू विकास परियोजना– बलरामपुर में
- बुक्सा आदिम जनजाति विकास परियोजना– नजीबाबाद (बिजनौर) में
- बिखरी जनजाति विकास परियोजना– सोनभद्र में

बैगा जनजाति की सामाजिक–शैक्षिक समस्याएँः–

बैगा जनजातियां पुजारी वर्ग में आती है और कैमूर पर्वत की निवासी हैं। ये कैमूर पर्वत के क्षेत्र में बसने वाले आदिवासियों के यहाँ पुजारी (पुरोहित) का काम करते हैं। ये पुरोहिती के अलावा गोचारण और पशुचारण का काम अपने सामंतों के यहाँ करते थे किन्तु ठेकेदार और सामंत लोगों के हाथों इनका बड़ा शोषण होता था। पहले जमींदारों और साहूकारों के यहाँ से डेढ़ा–बाड़ी पर ये अनाज उधार लाते थे और फसल के अंत में ड्यौढ़ा अनाज वापस करते थे। कई पीढ़ियाँ गुजर जाती थी पर ये साहूकार के अधीन बंधुआ जीवन जीने पर विवश रहते थे। ये जंगल, पहाड़ से प्राप्त वस्तुओं से भी अपना गुजारा करते थे। ये मधु, चिरौंजी, पत्तों की छाता बेचते थे। ये कंदमूल इकट्ठा करके खाते थे। इन्हें झोपड़ी बनाकर रहना पड़ता था। इनमें शिक्षा का अभाव पाया जाता था जिससे ये अन्धविश्वासी होते थे तथा बीमारी का इलाज झाड़–फूंक से करते थे। इनकी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक स्थिति बहुत ही खराब थी।[10]

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अब इस स्थिति में बड़ा परिवर्तन हुआ। विविध उद्योग–धन्धों में इन्हें काम मिलने लगा। ये महुआ, आंवला, हर्रे व बहेड़ा, शहद, बांस से बनी वस्तु इत्यादि एकत्र करके सही कीमत पर बेचकर अपनी आर्थिक, सामाजिक स्थिति में सुधार किये। सरकार द्वारा चलाये गये विकास कार्यक्रम से इनकी शैक्षिक तथा सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है।

वर्तमान में ये शिक्षा प्राप्त करके अपने सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति को सुधार रहे हैं। अब पंचवर्षीय योजना में इस पर सरकार ध्यान दे रही है। अब इन जनजातियों में चेतना उत्पन्न हुई है जिससे इनकी मानसिकता परिवर्तित हुई है और अंधविश्वास में कमी आई है।[11] फिर भी इनकी कुछ समस्याएँ अब भी मौजूद हैं जैसे–

1. इन्हें अपनी संस्कृति को बनाये रखना कठिन हो गया है।

2. ये कम पढ़े लिखे होते हैं और असभ्य समाज से सम्बन्धित होते हैं जिससे उनको रोजगार मिलने में कठिनाई आती है।
3. इनके आवास उपयुक्त प्राप्त नहीं हो पाते हैं।
4. इनके कौशल प्रशिक्षण में कमी रह गई हैं।
5. ये समाज की मुख्यधारा में अब भी पिछड़े हुए हैं।
6. इनके स्वास्थ्य हेतु व्यवस्थित रूप से कोई व्यवस्था नहीं लागू हो पायी है।
7. ये अब भी सरकारी योजना से दूर हैं।
8. ये अब भी जंगलों, पहाड़ों में रहते हैं।
9. इनकी आर्थिक स्थिति में अपेक्षित प्रगति नहीं हो पायी है।[12]

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं से बैगा जनजाति की सामाजिक स्थिति तथा शैक्षिक स्थिति में सुधार हुआ है जिससे उनमें सकारात्मक परिवर्तन हुआ है परन्तु बाहरी समाज से सम्पर्क के बाद इनकी संस्कृति विलुप्त होती जा रही है और समाज में बाल विवाह, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियां व्याप्त होती जा रही हैं। ये अपना परम्परागत रोजगार खोते जा रहे हैं जिससे इनकी आजीविका संकट में पड़ती जा रही है।

सुझाव :–

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि वर्तमान में इनके विकास हेतु जो भी योजना बनाई जाए उसमें निम्नांकित बिंदुओं का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिये–

- इनकी रूचि के अनुसार इन्हें विविध उद्योग–धंधों में लगाया जाना चाहिए।
- इनमें शिक्षा–प्रचार हेतु अलग से विद्यालय खोलना चाहिये। आश्रम पद्धति विद्यालयों में इनके बच्चों को भेजना चाहिये और प्रौढ़ों को साक्षर बनाने का अभियान चलाना चाहिये।
- वर्तमान अंधविश्वासों से इन्हें मुक्ति मिलनी चाहिये।
- इनके जन–मानस में व्याप्त हीन–भावना को निकाल देना चाहिये।

संदर्भ सूची–

1. गुप्ता, प्रो0 एम0एल0 एवं शर्मा, डॉ0 डी0डी0 'समाजशास्त्र', 2018, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृ0सं0 421–422
2. उ0प्र0 स्पेशल, इग्जाम टाइम्स, 2021, प्रयागराज, पृ0सं0 58–59
3. सिंह, वी0एन0, सिंह, जनमेजय, भारत में सामाजिक आन्दोलन, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2016, पृ0सं0 140
4. देशपाण्डेय, डॉ0 मेघा, बैगा जनजाति का समाजशास्त्रीय अध्ययन, बालाघाट जिले के संदर्भ में।
5. विभिन्न वेबसाइटों से प्राप्त जानकारी।
6. स्टेटिस्टीकल प्रोफाइल ऑफ शेड्यूल्ड ट्राइब्स (2013) जनजातीय मंत्रालय का सांख्यिकी विभाग, भारत सरकार।
7. नाथ, कैलाश, आदिवासी जनजाति आंदोलन, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ0सं0 77–81
8. मुकर्जी, डॉ0 रवीन्द्रनाथ, 'सामाजिक शोध व सांख्यिकी' 2020, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
9. एल्विन, वैरियर, (1939) 'द बैगा', जॉन मुर्रय अलबेमार्ले स्ट्रीट, डब्लू लंदन।
10. गुप्ता, डॉ0 पारूल, डेविड, डॉ0 अलका, ''बैगा जनजातियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन', IJARD, Volume 3: Issue 2: March 2018, page No. 465-467
11. भारत की जनगणना 2011 से प्राप्त जानकारी
12. सोनभद्र जिले के घोरावल विकास खण्ड के कुछ गॉव से प्राप्त जानकारी।